प्रगति–2

2016-2017

हिंदी

कक्षा VIII

NOT FOR SALE

स्वाध्यायान्मा प्रमदः
राज्य शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण परिषद्

SPONSORED BY :
DELHI BUREAU OF TEXT BOOKS

शिक्षा निदेशालय
रा.रा.क्षे., दिल्ली सरकार

प्रगति–2

2016-2017

हिंदी

कक्षा VIII

NOT FOR SALE

स्वाध्यायान्मा प्रमदः
राज्य शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण परिषद्

SPONSORED BY :
DELHI BUREAU OF TEXT BOOKS

शिक्षा निदेशालय
रा.रा.क्षे., दिल्ली सरकार

पुनर्वीक्षण :

डॉ. शारदा कुमारी
सुश्री लक्ष्मी पाण्डेय
मंडल शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, आर.के.पुरम, नई दिल्ली

परावर्द्धन एवं संपादन समूह :

- डॉ. जयशंकर शुक्ला, मैंटर शिक्षक,
  राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, राजनिवास मार्ग, दिल्ली
- श्री आलोक तिवारी, मैंटर शिक्षक
  राजकीय बाल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शाहबाद दौलतपुर, दिल्ली
- श्री संजीव शर्मा, मैंटर शिक्षक
  राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, किशनगंज, दिल्ली
- श्री अक्षय कुमार दीक्षित,
  राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय, फतेहपुर बेरी, नई दिल्ली
- श्रीमती वीना शर्मा
  राजकीय सर्वोदय कन्या विद्यालय, निलोठी, नई दिल्ली

प्रकाशन प्रभारी : सपना यादव

प्रकाशन दल : श्री नवीन कुमार, सुश्री राधा और श्री जय भगवान

भूमिका

दिल्ली सरकार ने बच्चों की शिक्षा के संदर्भ में एक बहुत ही महत्वपूर्ण निर्णय लिया कि सभी अध्यापक छोटे-छोटे समूहों में बैठकर छठी, सातवीं एवं आठवीं कक्षा के बच्चों की पुस्तकों का बारीकी से अवलोकन एवं अध्ययन करें और इन कक्षाओं के लिए निर्धारित पाठ्यपुस्तकों में दी गई रचनाओं एवं विषयों को आधार बनाकर सीखने-सिखाने के लिए पूरक सामग्री की रचना करें। इस समूचे अभ्यास का उद्देश्य यह था कि सभी अध्यापकों को एक ऐसा साझा धरातल मिले जहाँ वे बच्चों के मौजूदा अधिगम स्तर की समझ के आधार पर अपनी कक्षाओं के बच्चों के लिए अध्ययन अध्यापन की सामग्री मिल-जुलकर तैयार कर सकें।

दूसरे शब्दों में, कह सकते हैं कि बच्चों के लिए सरल एवं संदर्भ युक्त पठन सामग्री तैयार करने का यह एक महत्त्वपूर्ण प्रयास था। इस महती उद्देश्य को पूरा करने के लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा शिक्षा निदेशालय के हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, सामाजिक अध्ययन एवं विज्ञान के लगभग 20,000 अध्यापकों के लिए मई एवं जून 2016 में कार्यशालाएँ आयोजित की गई। इन कार्यशालाओं के सत्रों का संचालन सर्व शिक्षा अभियान के संकुल संसाधन समन्वयकों के सहयोग से मैंटर शिक्षकों द्वारा किया गया।

इन कार्यशालाओं में अध्यापकों ने विषयवस्तु के साथ-साथ कक्षा शिक्षण में प्रयुक्त तौर-तरीकों पर भी खुलकर चर्चा की। इस प्रकार हिन्दी विषय का अध्यापन कर रहे लगभग 4000 अध्यापकों (टी.जी.टी हिन्दी) ने अपने विषय के लिए पूरक अधिगम सामग्री तैयार की। इसके बाद मैंटर शिक्षकों के एक समूह ने कार्यशालाओं में तैयार इस सामग्री का संपादन किया और मंडल शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के विषय विशेषज्ञों द्वारा इस संपादित सामग्री का पुनर्वीक्षण किया गया। इस समूची प्रक्रिया में निर्धारित पाठ्य पुस्तकों की विषय वस्तु को आधार बनाते हुए पूरक अधिगम सामग्री तैयार की गई।

इस प्रक्रिया एवं सामग्री को 'कार्य में प्रगति' के रूप में देखा जाना चाहिए। यह सामग्री निर्धारित पाठ्य पुस्तकों का विकल्प नहीं है, बल्कि यह सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को आधार देने और उसका संवर्द्धन करने के लिए अतिरिक्त सामग्री है। हम अध्यापकों एवं अध्यापक शिक्षकों से अपेक्षा करते हैं कि बच्चों के साथ इस सामग्री के निर्वाह एवं अन्तःक्रिया से उपजे अनुभवों को हमारे साथ साझा करें, साथ ही इस प्रकार के प्रयासों में सुधार एवं संवर्द्धन के लिए अपने सुझाव भी हमें दें। आप अपने सुझाव एवं फीडबैक राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के होमपेज पर उपलब्ध फीडबैक प्रपत्र के ज़रिए ऑन लाइन भी भेज सकते हैं।

संवाद........अपने अध्यापक साथियों से

साथियों, आप सभी जानते हैं कि बच्चे औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने से पहले ही भाषा की जटिलताओं और नियमों को आत्मसात् कर पूर्ण भाषिक क्षमता के साथ विद्यालय की देहरी के भीतर प्रवेश करते हैं। जो बच्चे बोल नहीं पाते वे भी अपनी अभिव्यक्ति के लिए उतने ही जटिल वैकल्पिक संकेतों और प्रतीकों का विकास कर लेते हैं। आपने सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान बच्चों की इस सहजात भाषिक क्षमता का पूरा ध्यान रखते हुए और परिवार तथा आस-पास के लोगों के साथ अंतः क्रिया से उपजे अनुभवों का समुचित उपयोग करते हुए उन्हें पढ़ने और लिखने की रोमांचक दुनिया में प्रवेश करवाया हैं। आप इस बात की भरपूर समझ रखते हैं कि आप के पास आने वाले बच्चे भिन्न-भिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक आर्थिक पृष्ठभूमि के हैं, उनके पास दुनिया को अपनी ही तरह से देखने के अपने तरीके हैं। वे बड़े सहज भाव से अपनी बात, अपने अनुभव, भावनाएँ, इच्छाएँ व्यक्त कर देते हैं।

आपने पढ़ना-लिखना सीखने के अवसर देते समय इस सहजता को ध्यान में रखा है। अब आपका समूचा ध्यान इस बात पर है कि आपके विद्यार्थी जिस सहजता के साथ पढ़ने लिखने की दुनिया में प्रवेश कर गए हैं, उसी सहजता के साथ वे इन भाषायी कौशलों में निपुणता भी हासिल करें। इस महती कार्य में आपका साथ देने के लिए प्रगति-2 आपके पास है जिसका अन्ततः उद्देश्य है बच्चों को उत्साही पाठक बनने के लिए प्रोत्साहित करना और उनमें परिवेशीय सजगता का भाव बनाए रखना।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा कक्षा छह, सात एवं आठ के लिए तैयार हिन्दी की पाठ्य पुस्तकों 'वसंत' की रचनाओं को आधार बनाते हुए 'प्रगति' विद्यार्थियों के लिए भाषायी गतिविधियों का एक विस्तृत फ़लक प्रस्तुत करती है। विद्यार्थी रचनाओं का रसास्वादन अपनी मूल पुस्तक 'वसंत' से करेंगे और उन रचनाओं के पठन से उपजी अनुभूतियों को अपने अनुभवों से जोड़ने व कल्पना की ऊँची उड़ान भरने के लिए 'प्रगति' की गतिविधियों का आनन्द उठाएँगे। सरस और सरल गतिविधियों का यह व्यापक संसार विविधता का एक सुंदर ताना-बाना प्रस्तुत करता है जो विद्यार्थियों को न केवल भाषायी कौशलों में निपुणता प्राप्त करने में मदद करेगा बल्कि उन्हें बुनियादी मूल्य संरचना और भविष्य के प्रति दृष्टि निर्माण की राह पहचानने में भी योगदान देगा।

यह 'वसंत' की रचनाओं का प्रवेश द्वार है साथ ही भाषायी कौशलों में समृद्धता प्राप्त करने का सरस रास्ता भी।

'प्रगति' के साथ अन्तःक्रिया करते समय अगर किसी पल विशेष में आपको ऐसा लगे कि अभ्यास कार्य की बहुलता है तो घबराएँ नहीं, अभ्यास कार्य की अनिवार्यता अर्जित किए गए कौशलों के संवर्द्धन के लिए है न कि उन्हें निरूत्साहित करने के लिए। यहाँ पर समय प्रबंधन से जुड़े आपके कौशल बहुत महत्वपूर्ण हैं। किसी रचना संदर्भ के विशेष में आपको यह महसूस होगा कि उसके लिए दी गई गतिविधियाँ रचना के पठन कौशल का आकलन नहीं कर रही तो ऐसा इसलिए किया गया है कि आप उस पाठ विशेष को पढ़ाने के बाद विद्यार्थियों से ही प्रश्न बनवाएँ। प्रश्नों की प्रकृति ऐसी हो जो कल्पनाशीलता, अनुमान लगाने की क्षमता, वर्गीकरण, विश्लेषण, विवरण आदि प्रस्तुत करने की क्षमता का विकास करते हो। यदि विद्यार्थी ऐसे प्रश्न बना पाते हैं तो समझिए कि वे पाठ के मर्म को पूरी तरह से समझ रहे हैं। बच्चों के प्रति आपके सरोकार एवं आपकी रचनात्मकता इस सामग्री का भरपूर लाभ उठाएगी। आपके सुझावों की भी अपेक्षा सदैव रहेगी।

विषय सूची

क्रम संख्या	अध्याय	वर्ग	पृष्ठ संख्या
1.	क्या निराश हुआ जाए	निबंध	1
2.	कबीर की साखियाँ	दोहे	10
3.	कामचोर	कहानी	17
4.	सुदामा चरित	कविता	22
5.	जहाँ पहिया है	रिपोर्ताज	27
6.	अकबरी लोटा	कहानी	32
7.	सूर के पद	कविता	40
8.	पानी की कहानी	निबंध	45
9.	टोपी	कहानी	53

पाठ 1

क्या निराश हुआ जाए

–हजारी प्रसाद द्विवेदी

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हिंदी के अप्रतिम निबंधकार हैं। इनके निबंधों में जहाँ अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति हार्दिकता का भाव होता है वहीं नवीन जीवनबोध तथा विकास की राह में उसे पुन: परिभाषित करने की चाह भी होती है। द्विवेदी जी अपने ललित निबन्धों में अपने पांडित्य को अपनी भाषा का बोझ नहीं बनने देते बल्कि भाषा की लय, वस्तुओं के बिंबात्मक चित्र तथा संदर्भों का बखूबी प्रयोग करते हुए भाषा को सहजता की ओर ले जाते हैं। इसी कारण उनके निबंध न तो गंभीरता का तेवर छोड़ते हैं और न सहजता का बाना।

प्रस्तुत निबंध 'क्या निराश हुआ जाए' में लेखक इस बात को लेकर चिंतित है कि पूरे देश में ठगी, डकैती, चोरी, भ्रष्टाचार, अविश्वास इत्यादि का जो वातावरण बना है वह मनुष्य के लिए अत्यंत निराशाजनक है। हजारी प्रसाद द्विवेदी के मन में बार–बार यह प्रश्न कौंधता है कि मानव महासमुद्र कही जाने वाली भारतीय आदर्शों की मिलन भूमि जिसमें आर्य, द्रविड़, हिन्दू, मुसलमान तथा अनेक जनजातियाँ शामिल हैं, जो तिलक, गाँधी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर मदन मोहन मालवीय आदि की प्रेरणाओं से प्रेरित है, वहाँ क्या सचमुच आज ऐसा माहौल बन गया है जब ईमानदारी को मूर्खता और सच्चाई को भय अथवा बेबसी की जननी समझा जाने लगा है। क्या सचमुच जीवन के महान मूल्यों से लोगों की आस्था हिलने लगी है। लेखक को इसका विश्वास नहीं है। लेखक का मानना है कि भारत सदा से भौतिकता के स्थान पर मनुष्य के आंतरिक गुणों को अधिक महत्व देता आया है। सुदूर अतीत से ही भारत वर्ष में शोषितों, वंचितों और कमज़ोर लोगों की सहायता को धर्म माना गया है। भारत में कानून और धर्म में अंतर नहीं किया जाता रहा है। आज एकाएक यह देखा जा रहा है कि बहुत से धर्म भीरू लोग भी कानून की कमियों का लाभ उठाने में संकोच नहीं करते। किंतु भारत में अधिकतर लोग अब भी धर्म को कानून से बड़ी चीज मानते हैं। इसीलिए सामान्य भारतीय आज भी महिलाओं के सम्मान, मानव–मानव में प्रेम, को महत्त्व देते हैं और झूठ और चोरी को गलत व दूसरों को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझते है।

लेखक दो उदाहरणों से अपनी बात की पुष्टि करता है। एक बार लेखक ने गलती से रेलवे का टिकट लेते समय 10 की बजाय 100 रूपये का नोट दे दिया तथा ट्रेन में जा बैठा। कुछ देर बाद वह आश्चर्यचकित रह गया कि टिकट बाबू स्वयं उनको ढूंढ़ता हुआ उनके 90 रुपये लौटाने आया था। सच्चाई और ईमानदारी के प्रति लेखक के विश्वास को इस घटना ने बहुत बल प्रदान किया। दूसरी घटना एक बस यात्रा की है। जिसमें बस घनी अंधेरी रात में अचानक खराब हो गई और कंडक्टर भी गायब हो गया। आशंका यह थी कि वह क्षेत्र डाकुओं का क्षेत्र था तथा ड्राइवर ने जानबूझ कर बस रोक दी थी। सभी यात्री ड्राइवर को मारने–पीटने पर तुले थे किंतु लेखक ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया। थोड़ी ही देर में कंडक्टर एक दूसरी बस लेकर आ गया। यही नहीं वह लेखक के बच्चों को

भूख से व्याकुल जानकर उनके लिए दूध भी ले आया था। लेखक इन घटनाओं के बल पर दृढ़तापूर्वक मानता है कि मनुष्यता अभी समाप्त नहीं हुई है। उसकी मान्यता है कि केवल विश्वासघात, ठगी और धोखे का हिसाब रखना, जीवन को कष्टकर कर लेना है क्योंकि ऐसी घटनाएँ भी कम नहीं हैं जब अपरिचित लोगों ने सहायता की, ढ़ाढ़स दिया, हिम्मत बधाई। इसलिए निराश होने की जरूरत ...... नहीं है।

- **वस्तुनिष्ठ प्रश्नः**

1. **ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय क्यों समझा जाने लगा है-**

   (क) ईमानदार लोगों को मूर्ख बनाना आसान होता है।

   (ख) ईमानदार लोग वास्तव में मूर्ख होते हैं।

   (ग) आजकल ईमानदार लोग सचमुच तरक्की नहीं कर पाते।

   (घ) ऐसी मान्यता बनती जा रही है कि ईमानदार लोग तरक्की नहीं कर सकते।

2. **पाठ में किसी की कमियों में रस लेने को बुरा क्यों कहा गया है-**

   (क) क्योंकि इससे लोग शर्मिंदा होते हैं।

   (ख) क्योंकि इससे बुरे लोग सुधर जाते हैं।

   (ग) क्योंकि इससे अच्छे लोगों को संतोष मिलता है।

   (घ) क्योंकि इससे दोषों का निवारण नहीं होता अपितु किसी की भावनाएं आहत होती हैं।

3. **टिकट बाबू लेखक को क्यों ढूँढ़ रहा था-**

   (क) बकाया पैसा लेने के लिए।

   (ख) माफी माँगने के लिए।

   (ग) अतिरिक्त पैसे लौटाने के लिए।

   (घ) टिकट देने के लिए।

4. **'श्रमजीवी' शब्द से आप क्या समझते हैं-**

   (क) श्रम का महत्व

   (ख) श्रम रूपी जीव

   (ग) श्रम दान

   (घ) श्रम करके आजीविका कमाने वाला।

प्रश्न : आपकी दृष्टि में धार्मिक लोगों के द्वारा भी बेईमानी, भ्रष्टाचार, गरीबों और कमजोरों को सताने जैसे कार्य क्यों किए जाते है?

प्रश्न 2: क्या आपको लगता है कि ईमानदारी, सत्यनिष्ठा तथा कड़ी मेहनत किसी व्यक्ति की सफलता को आज भी सुनिश्चित करते हैं? समूह में चर्चा करते हुए किसी ऐतिहासिक व्यक्ति के जीवन का उदाहरण देकर अपनी बात को स्पष्ट करें।

3. रचनात्मक लेखन :-

शिक्षक आठ-आठ विद्यार्थियों का समूह बनाकर उन्हें लेखक के द्वारा बस यात्रा के दौरान हुए अनुभवों पर चर्चा के लिए प्रेरित करे तथा समूहों की सुविधा व रूचि के अनुसार इस घटना को कहानी या नाटक में रूपांतरित करने के लिए प्रोत्साहित करें।

★ पाठ में आए मानवीय गुणों को व्यक्त करने वाले शब्दों तथा मनुष्य की कमजोरियों/कमियों को व्यक्त करने वाले शब्दों की विद्यार्थियों से सूची बनवाई जा सकती है। समान आकार की पर्चियों पर इन शब्दों को लिखकर 'राजा', 'मंत्री', 'चोर', 'सिपाही' की तरह का खेल खेला जा सकता है। अर्थात् प्रत्येक गुण को कुछ धनात्मक अंक आवंटित किए जा सकते हैं जबकि कुछ अवगुणों को ऋणात्मक अंक आवंटित किए जा सकते हैं। पर्चियों को उछाला जाए तथा प्रत्येक विद्यार्थी अपनी मनपसंद पर्ची उठा ले। अब सभी विद्यार्थियों की पर्चियों के आधार पर उनको अंक आवंटित कर दिए जाए। यही प्रक्रिया कई बार दोहराकर खेल को आगे बढ़ाया जा सकता है।

4. शिक्षक स्वयं का पात्रांतरण कर, अपने आप को लेखक (हजारी प्रसाद द्विवेदी) के रूप में प्रस्तुत कर सकता है तथा विद्यार्थी लेखक से प्रत्यक्ष बातचीत, चर्चा अथवा उसका साक्षात्कार ले सकते हैं।

5. **क्या होता यदि –**

1) समाचार–पत्रों में केवल बुरी घटनाएँ ही छपती ?

....

....

2) लेखक को जीवन में केवल धोखे ही मिले होते ?

....

....

3) समाचार–पत्रों में भ्रष्टाचार के विरुद्ध आक्रोश न होता ?

....

....

4) बस यात्री ड्राइवर को कंडक्टर के आने से पहले ही मार–पीट देते ?

....

....

5) लेखक ड्राइवर को नहीं बचाता ?

....

....

6) कंडक्टर बस अड्डे से दूसरी खाली बस न लेकर आता ?

....

....

6. पाठ से आगे/मन की बात

1) पाठ में लेखक ने अपने जीवन से जुड़ी दो अच्छी घटनाओं का वर्णन किया है। क्या आपके जीवन में भी कोई ऐसी घटना घटी है जब किसी ने बिना किसी स्वार्थ/कारण के आपकी सहायता की है। अपने अनुभव को याद कीजिए और लिखिए।

....

....

....

....

....

....

2) पाठ में ईमानदारी का एक उदाहरण दिया गया है। क्या आपको भी कोई ऐसी घटना याद है जब आपने ईमानदारी दिखाई हो। अपने शब्दों में लिखिए।

....

....

....

....

....

....

7. लेखक और बस यात्रा

आपने इस लेख में एक बस की यात्रा के बारे में पढ़ा। इससे पहले भी आप एक बस यात्रा के बारे में पढ़चुके हैं, यदि दोनों बस–यात्राओं के लेखक आपस में मिलते तो एक–दूसरे को कौन–कौन सी बातें बताते? अपनी कल्पना से उनकी बातचीत लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

8. इस पाठ में दया–ममता, सच्चाई और ईमानदारी आदि अच्छाइयों की बात की गई है आपके अनुसार और कौन–कौन सी अच्छाईयाँ हैं जिनसे अपने और समाज के जीवन को और अच्छा बनाया जा सकता है। उनके नाम लिखिए

शब्द - रचना

9. भाषायी अभिव्यक्ति में शब्दों का बहुत महत्व होता है। अपनी बात कहने के लिए सही शब्दों का चुनना ज़रूरी होता है। शब्द ही भाषा का मूल आधार होते हैं।

   मूल शब्दों में उपसर्ग अथवा प्रत्यय जोड़कर या दो शब्दों को मिलाकर नए शब्द बनाए जाते हैं।

   उपसर्ग - उपसर्ग भाषा की वह लघुतम (सबसे छोटी) इकाई है जिसका स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता फिर भी इसकी स्वतंत्र सत्ता है, इसलिए इन्हें शब्दांश कहा जाता है। इन्हें शब्दों के आरंभ में जोड़कर शब्द-निर्माण किया जाता है। इनके जुड़ने से शब्द के अर्थ में विशेषता आ जाती है। अभी हम उपसर्गों की बात करेंगे।

नीचे कुछ उपसर्ग दिए गए हैं ध्यान से पढ़िए और उनसे नए-नए शब्द बनाइए।

उपसर्ग	अर्थ
बे -	बिना
अ -	निषेध (मनाही)
दुर -	बुरा

बे + ... = -	बे + ... =
बे + ... = -	बे + ... =
अ + ... = -	अ + ... =
अ + ... = -	अ + ... =
दुर + ... = -	दुर + ... =
दुर + ... = -	दुर + ... =

10. **आइए दिए गए नामों को पढ़ें और उन्हें उनके सही खानों में पहुँचाएँ–**

डाइवर, बच्चे, यात्री, हजारी प्रसाद द्विवेदी, ईमानदारी, सच्चाई, बस, मनुष्य,

रवीन्द्रनाथ ठाकुर, भारत, पानी, महात्मा गाँधी, दिल्ली, रेलवे स्टेशन,

टिकट बाबू, समाचार पत्र, सहायता, इंसानियत

पाठ 2

कबीर की साखियाँ

भूमिका

कबीर जी भक्त कवि थे। वे ईश्वर के निराकार, सर्वव्यापी रूप की उपासना करते थे। वह जाति-पाति, छुआछूत, धार्मिक भेदभाव व आडम्बरों के कट्टर विरोधी थे। कबीर जी का मानना था कि ईश्वर किसी विशेष स्थान में वास नहीं करता है बल्कि वह तो हर जीव में समाया हुआ है। वे मानवता को सबसे ऊपर मानते थे।

उस समय हमारे समाज में अनेक बुराइयाँ आ गयी थीं। अशिक्षा के कारण लोग धर्म से डरने लगे थे और बाह्य आडम्बरों में विश्वास करने लगे थे। इन सब बुराइयों को दूर करने के लिए कबीर ने ज्ञान की शिक्षा दी तथा आम लोगों की बोलचाल में शामिल शब्दों का प्रयोग किया है अपनी बात को समझाने के लिए उदाहरणों का भी प्रयोग किया है।

सार

पहले दोहे में कबीर जी ने जाति-पाति को महत्व न देने के लिए कहा है। उनका मानना है कि सभी मनुष्य बराबर होते हैं तथा उनसे उनकी जाति नहीं पूछनी चाहिए बल्कि उनसे उनके ज्ञान के बारे में पूछना चाहिए जैसे - तलवार का मोल करना चाहिए म्यान का नहीं क्योंकि तलवार काम की वस्तु है म्यान नहीं अर्थात म्यान कितनी भी सुन्दर क्यों न हो कीमत तलवार की होती है।

दूसरे दोहे में कबीर ने व्यवहार से संबंधित ज्ञान दिया है उनका मानना था कि यदि कोई व्यक्ति गाली दे रहा है अर्थात् - गलत शब्दों का प्रयोग कर रहा है तो हमें बदले में गाली नहीं देनी चाहिए यदि हम भी उलटकर गलत शब्दों का प्रयोग करेंगे तो वह अनेक हो जाएँगे, क्योंकि क्रिया-प्रतिक्रिया बढ़ती जाएगी। कबीर जी आगे कहते हैं कि यदि गाली के बदले गाली नहीं देंगे तो वह एक ही रहेगी। (बात/स्थिति संभल जाएगी क्योंकि उसे बढ़ावा नहीं मिलेगा)

तीसरे दोहे में कबीर ने धार्मिक आडम्बरों की ओर इशारा करके उनका खण्डन किया है। उनका मानना है कि ईश्वर का ध्यान करने के लिए माला और मंत्रों का सहारा लेते हैं किन्तु मन उनका एकाग्र नहीं है, उसे ईश्वर का स्मरण नहीं कहा जा सकता है। वे कहते हैं कि ऐसे व्यक्ति हाथ में माला लेकर फिराते हैं और मुख में जीभ फिरती

है और मन तो दसों दिशाओं (सभी दिशाओं) में फिरता है अर्थात् ईश्वर स्मरण में एकाग्रता नहीं है तो वह ईश्वर–भक्ति नहीं कहलाती है।

चौथे दोहे में कबीर ने ऊँच–नीच, छोटे–बड़े के भेदभाव पर चोट करते हुए कहा है कि पैरों के नीचे की घास की भी निंदा नहीं करनी चाहिए क्योंकि जब कभी वही घास का तिनका उड़कर आँख में पड़ जाता है तो बहुत पीड़ा होती है।

इसका भाव यह है कि हमें किसी को भी छोटा या कम नहीं आँकना चाहिए क्योंकि समय आने पर वह भी बलवान हो सकता है और नुकसान पहुँचा सकता है।

पाँचवे दोहे में कबीर ने मन की निर्मलता व शीतलता पर बल देते हुए कहा है कि यदि हम अपने मन से बुरे भावों को निकालकर उसे शीतल (शांत) कर लें तो जग (संसार) में कोई भी शत्रु नहीं है और इस तरह अह्म (आपा) को त्याग दें तो सब दया करते हैं।

पाठ से

1. 'तलवार का महत्व होता है म्यान का नहीं', किस दोहे में कहा गया है। पाठ में से ढूँढ़कर लिखें।

....

....

....

....

2. जग में बैरी कोई नहीं जो मन सीतल होय।
या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय।।
दिए गए दोहे में कबीर जी किसे छोड़ने की बात कह रहे हैं? और क्यों? उत्तर लिखिए।

....

....

....

....

3. मनुष्य के व्यवहार में ही दूसरों को विरोधी बनाने वाले दोष होते हैं। किस दोहे में कहा गया है? लिखिए।

....

....

....

....

4. ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय।।
इस दोहे में कैसी वाणी बोलने के लिए कहा गया है और क्यों?

....

....

....

....

पाठ से आगे

5. दिए गए दोहे कबीर जी द्वारा लिखे गए है। हमारे देश में अनेक संत कवि हुए है जिन्होंने समय-समय पर लोगों को जगाने, आपस में प्रेम व्यवहार करने के लिए ज्ञान दिया है तथा धार्मिक आडम्बरों का विरोध किया है। ऐसे ही दो संत कवियों का जीवन परिचय पता करिए तथा उनके दोहे इकट्ठे करके लिखिए।

....

....

....

....

6. दी गई साखियों में क्षेत्रीय बोलियों का प्रभाव दिखाई देता है जिस कारण उनके उच्चारण व वर्तनी में अंतर आ जाता है ऐसे शब्द देशज शब्द कहलाते हैं। दिए गए शब्दों को उनके प्रचलित/हिन्दी रूप से मिलाइए।

बानि	
दिसि	
दुहेली	
तरवार	
बैरी	
आँखि	
सीतल	
जीभि	
पाऊँ	
तलि	

7. कबीर जी भक्त कवि होने के साथ-साथ समाज-सुधारक भी थे, उन्होंने समाज की बुराइयों के खिलाफ आवाज़ उठाई और लोगों को ज्ञान देकर उनके अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करने का प्रयत्न किया। वर्तमान समय में भी अनेक लोग समाज के लिए कार्य कर रहे हैं। क्या आप भी किसी ऐसे व्यक्ति को/के बारे में जानते हैं? ऐसे व्यक्ति का परिचय व उसके कार्य के बारे में लिखिए।

....

....

....

....

....

8. कबीर ने साखियाँ लिखते समय देशज शब्दों का प्रयोग किया है। आप पुस्तक के अन्य पाठों में से देशज (क्षेत्रीय बोली) शब्दों को खोजकर लिखिए साथ ही उनके प्रचलित हिन्दी रूप भी लिखिए।

देशज शब्द	**मानक रूप (प्रचलित रूप)**
मुलुक	मुल्क
खमा	क्षमा
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

9. समानार्थी शब्द

किसी शब्द के मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्द को समानार्थी शब्द कहते हैं। दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्द के स्थान पर समानार्थी शब्द इस प्रकार लिखिए कि वाक्य का अर्थ न बदले।

1. जग में कोई <u>बैरी</u> नहीं होता है।

   जग में कोई शत्रु नहीं होता है।

   ऊपर दिए गए उदाहरण को ध्यान से पढ़िए और समझिए –

1) माला <u>हाथ</u> में फिरती है।

   ....

2) हम सबने मिलकर <u>तय</u> किया कि सब बाहर घूमने चलेंगे।

   ....

3) मैंने अपने भाई को <u>चिट्ठी</u> लिखी थी।

   ....

4) थोड़ा काम <u>शेष</u> रह गया है।

   ....

5) आसमान में <u>बादल</u> छा गए हैं।

   ....

10. वचन बदलो

वचन बदलते समय ध्यान रखना चाहिए कि जिन स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में "ा" की मात्रा होती है, उनका बहुवचन रूप बनाते समय उस शब्द में ए तथा 'ँ' लगता है। जैसे –

एकवचन **बहुवचन**

बाला बालाएँ

इसी प्रकार दिए गए शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए :-

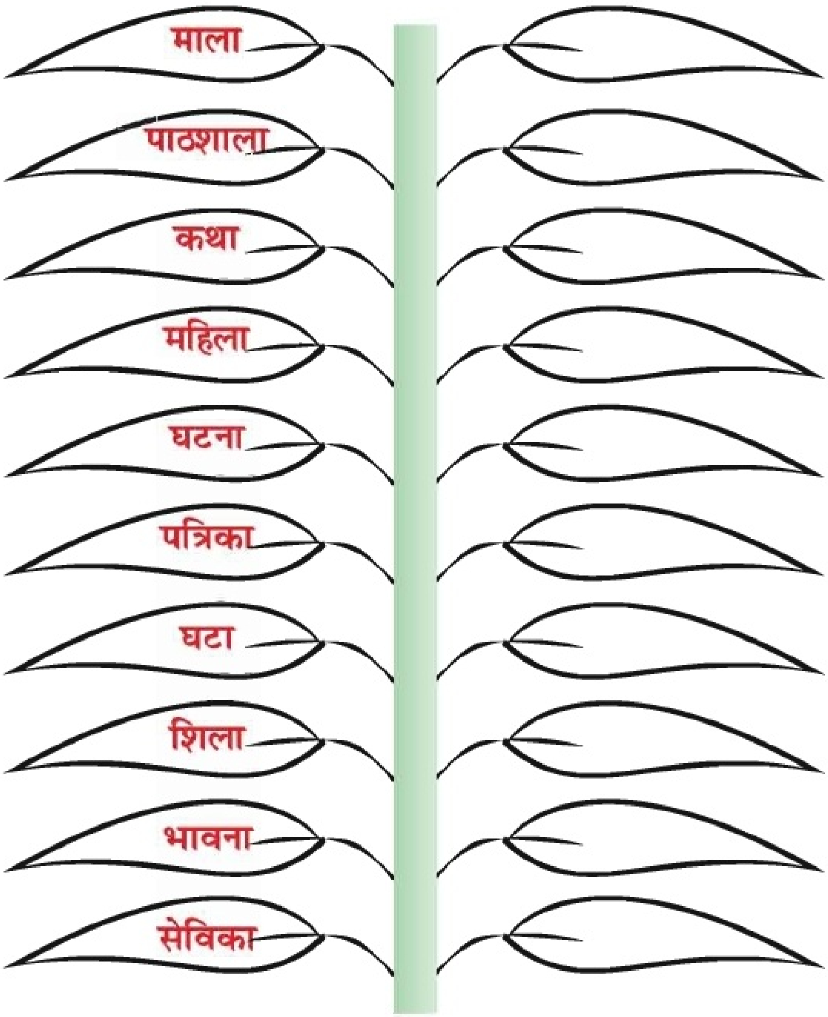

पाठ 3

कामचोर

दोस्तो, आपको एक दिन में कितनी बार किसी बड़े व्यक्ति से यह सुनने को मिलता है "आजकल के बच्चे तो किसी की नहीं सुनते" या "चुप बैठ जाओ" या "ये तो आलसी है, कामचोर है"।

ये बातें या ऐसी और अनेक बातें केवल आप नहीं बल्कि दुनिया के लगभग सभी बच्चे कभी न कभी जरूर सुनते हैं। ऐसी ही कुछ बातें आपको आज की इस रोचक कहानी में भी पढ़ने को मिलेंगी। इस कहानी के नायक-नायिकाएँ आप जैसे ही कुछ बच्चे हैं।

इस कहानी का नाम तो कामचोर है लेकिन यह 'कामचोरों' की कहानी तो कतई नहीं है। यह एक संयुक्त परिवार की कहानी है। इस घर में बच्चों की अच्छी-खासी फौज है। इनकी देखभाल के लिए घरवालों ने बहुत-से नौकर रखे हुए हैं। बच्चों को हर वस्तु उनके हाथ में मिल जाती है। इसलिए बड़ों को लगता है कि सभी बच्चे आलसी और निकम्मे हो गए हैं। उन्हें लगता है कि बच्चों को अपना काम खुद करने की आदत होनी चाहिए। कहानी कुछ इस तरह शुरू होती है कि अब बच्चे कुछ काम करने का फैसला कर लेते हैं। सबसे पहले तो वे सब बच्चे हिल हिलाकर पानी पीना शुरू करते हैं। लीजिये, पानी के मटकों के पास ही घमासान हो गया। यह देखकर अम्मा ने कहा, "बहुत से काम हैं जो तुम कर सकते हो। मिसाल के लिए, ये दरी कितनी मैली हो रही है। आंगन में कितना कूड़ा पड़ा है.पेड़ो में पानी देना है"।

सब बच्चे काम में जुट गए। एक दरी पर बहुत से बच्चे जुट गए और चारों ओर से कोने पकड़ कर झटकना शुरू कर दिया। दो चार ने लकड़ियाँ ले कर धुँआधार पिटाई शुरू कर दी। सारा घर धूल से अट गया. खाँसते-खाँसते सब बेदम हो गए।

इसके बाद सबने आँगन में झाड़ू देने का फैसला किया। झाड़ू एक थी। तुरंत ही झाड़ू के पुर्जे उड़ गए। जितनी सींकें जिसके हाथ पड़ी, वह उससे ही उलटे सीधे हाथ मारने लगा, किसी ने कहा- "झाड़ू देने से पहले जरा सा पानी छिड़क लेना चाहिए" बस, यह ख्याल आते ही तुरंत दरी पर पानी छिड़का गया। पानी पड़ते ही सारी धूल कीचड़ बन गयी।

इसके बाद बच्चों ने फैसला किया कि पेड़ों को पानी दिया जाए। बस, सारे घर की बाल्टियाँ, लोटे, तसले, भगोने, पतीलियाँ, लूट ली गयी। जिन्हें ये चीजें भी न मिली वे डोंगे कटोरे और गिलास ही ले भागे। अब सब लोग नल पर टूट पड़े। यहाँ भी वह घमासान मची कि क्या मजाल जो एक बूँद पानी भी किसी के बर्तन में आ सके।

इसके बाद बच्चें मुर्गियों को बंद करने चले। कर दें। बस, शाम ही से जो बांस, छड़ी हाथ पड़ी, लेकर मुर्गियों हाँकने लगे। मुर्गियां दड़बों में जाने को राजी न थी। इधर, किसी को सूझा कि भेड़ों को दाना खिला दिया जाये। दिन-भर की भूखी भेड़ें

दाने का सूप देखकर जो सबकी सब झपटी तो भाग कर जाना कठिन हो गया। उधर कुछ बच्चे चार भैंसों का दूध दुहने पर जुट गए। अंत में बड़ों ने तंग आकर चेतावनी दे दी, "अगर किसी बच्चे ने घर की किसी चीज को हाथ लगाया तो बस, रात का खाना बंद हो जायेगा"।

तो देखा आपने ? घर के बड़े तो उन बच्चों को सुधारने के लिए काम में लगाते हैं परन्तु वे सारे घर में भूकंप की स्थिति पैदा कर देते हैं। वे सभी बच्चे घरवालों की परेशानियों का कारण बन जाते हैं। वे उस तरह के काम करने के अभ्यस्त नहीं हैं, जो वे करना शुरू कर देते हैं। अचानक उन्हें काम करने के लिए कहा जाता है, तो रोचक और हड़बड़ी की स्थिति बन जाती है। घरवाले अपना सिर पिटते रह जाते हैं।

ये कहानी इस्मत चुगताई द्वारा लिखित है। इस्मत चुगताई (जन्म: 15 अगस्त 1915-निधन: 24 अक्टूबर 1991) भारत की एक प्रसिद्ध लेखिका थीं। उन्हें 'इस्मत आपा' के नाम से भी जाना जाता है। वे उर्दू साहित्य की सर्वाधिक विवादास्पद और सर्वप्रमुख लेखिका थीं, जिन्होंने महिलाओं के सवालों को नए सिरे से उठाया। उन्होंने ठेठ मुहावरेदार भाषा का इस्तेमाल किया था। उनकी भाषा अद्‌भुत है और इसने उनकी रचनाओं को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने स्त्रियों को उनकी अपनी जुबान के साथ अपनी कहानियों में पेश किया।

उनकी रचनाओं में सबसे आकर्षित करने वाली बात उनकी निर्भीक शैली थी। उन्होंने अपनी रचनाओं में समाज के बारे में निर्भीकता से लिखा और उनके इसी दृष्टिकोण के कारण साहित्य में उनका खास मुकाम बना।

उन्होंने बच्चों के लिए भी कुछ कहानियाँ लिखी हैं, जैसे यह कहानी- कामचोर। यह कहानी हास्य-शैली में लिखी गई है। मनोरंजन के साथ-साथ यह हमें कुछ संदेश भी देती है। हमें किसी भी काम को बड़ी सूझ-बूझ के साथ करना चाहिए वरना बिना सोचे समझे किया गया काम हमें मुसीबत में डाल सकता है।

प्रश्न 1: भारत के सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य पर नज़र डालें तो बहुत से बच्चे न केवल घर के कामों में सहयोग देते हैं अपितु आर्थिक उपार्जन के कामों से जुड़े होते हैं जबकि कुछ बच्चे अपने निज के काम भी स्वयं नहीं करते।

इस बारे में अपने विचार व्यक्ति कीजिये।

____

____

____

____

____

प्रश्न 2: आपके परिवार में कितने सदस्य हैं। बड़े से लेकर छोटे सदस्य के कामों का विवरण लिखिए।

प्रश्न 3: घर के किन कामों को आप रूचि के साथ करते हैं और किन कामों को बाध्यता के रहते करते हैं, लिखिए।

4: नीचे लिखे वाक्यों को पढ़े और रेखांकित शब्दों को सही शीर्षक के नीचे लिखें–

(क) उन्हें किसी सराय में जगह न मिली।

(ख) वे ईसा के उपदेशों को याद करते हैं।

(ग) एक गरीब यहूदी बढ़ई अपनी पत्नी मैरी के साथ बैथलेहम आया।

(घ) वे एक अस्तबल में ठहर गए।

(ङ) बाज़ारों में खूब रौनक होती है।

संज्ञा	क्रिया	विशेषण	सर्वनाम

5. संकेतों की सहायता से वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखकर शब्द सीढ़ी बनाइए -

संकेत

सीधे-सामने

1. जो परिश्रम करता है

2. बड़ों की आज्ञा मानने वाला

3. जो आज के समय का हो

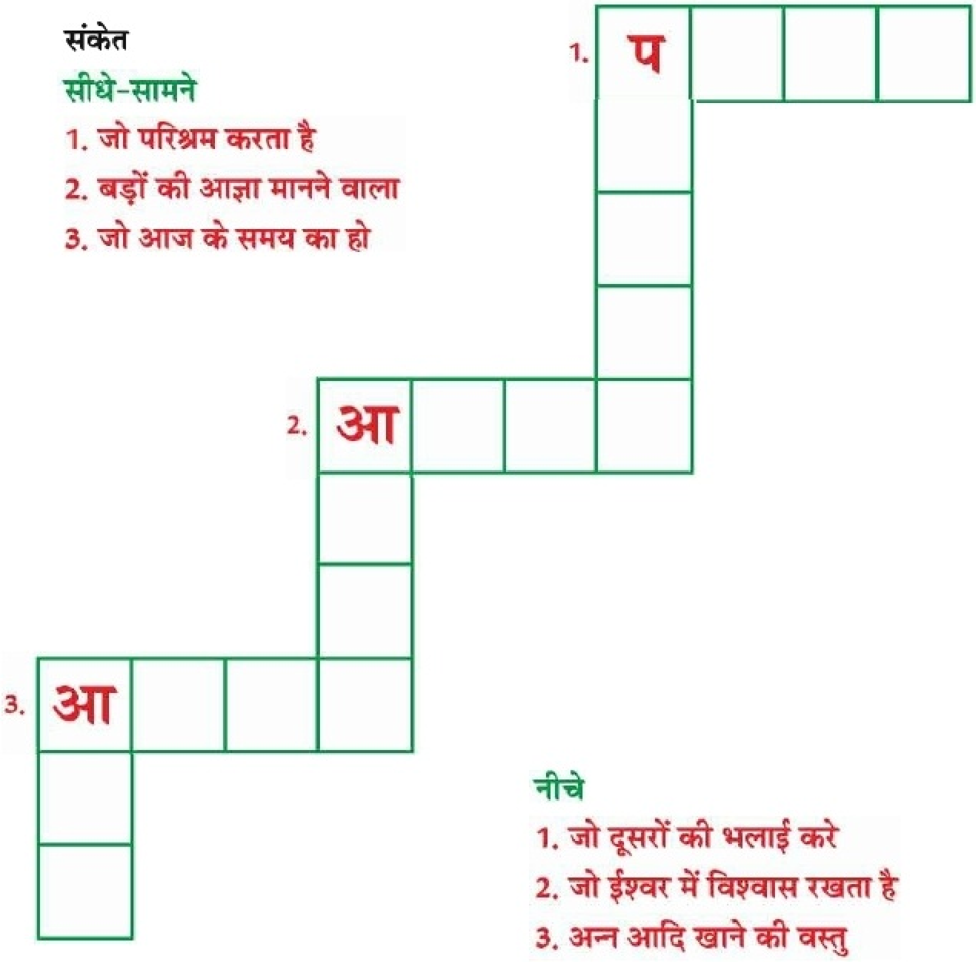

नीचे

1. जो दूसरों की भलाई करे

2. जो ईश्वर में विश्वास रखता है

3. अन्न आदि खाने की वस्तु

शब्द-सीढ़ी

6. संकेतों की सहायता से विलोम शब्द लिखकर शब्द-सीढ़ी पूरी करो-

संकेत

सीधे

1. गंदा का विलोम
2. परिश्रमी का विलोम
3. अंधकार का विलोम
4. सरल का विलोम
5. गरीब का विलोम

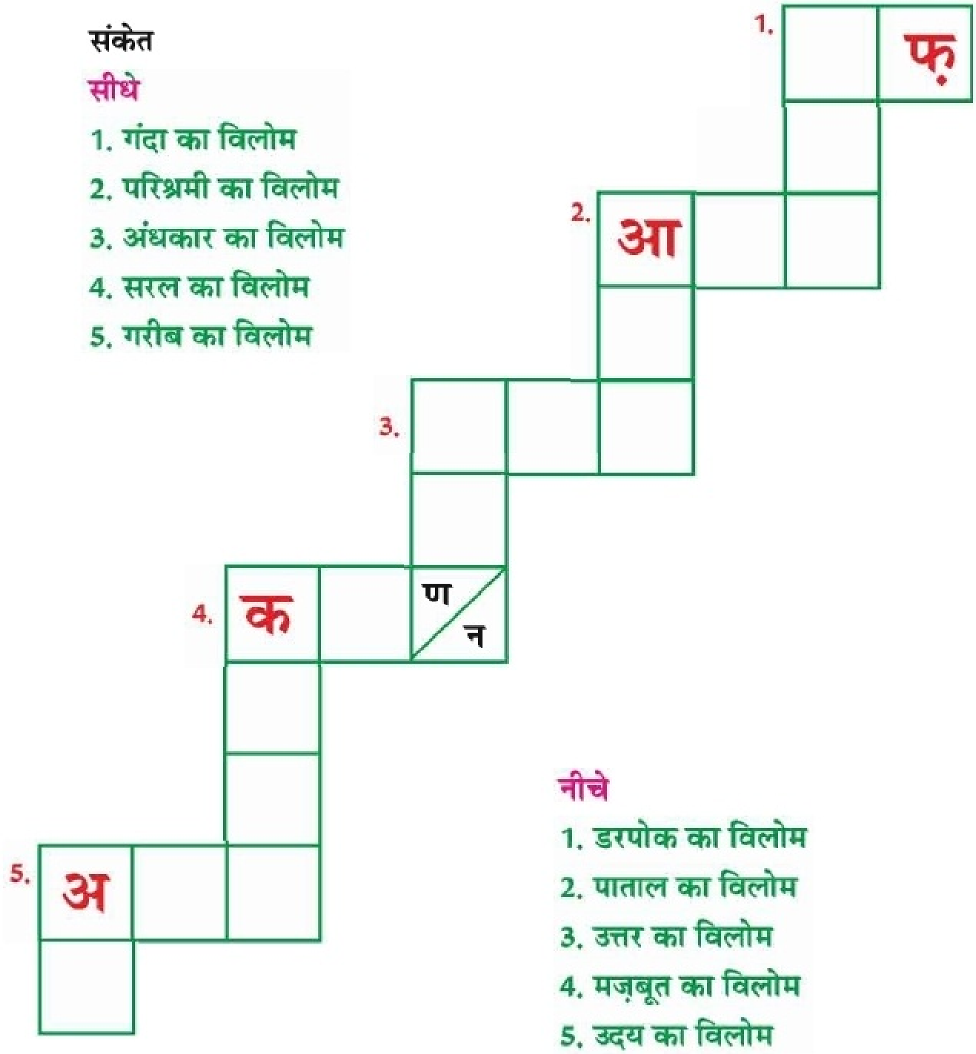

नीचे

1. डरपोक का विलोम
2. पाताल का विलोम
3. उत्तर का विलोम
4. मज़बूत का विलोम
5. उदय का विलोम

पाठ 4

सुदामा चरित

सुदामा चरित

दोस्तो, आपके अनेक दोस्त होंगे। दोस्ती का रिश्ता वह रिश्ता होता है जिसे हम स्वयं बनाते हैं। उसे निभाने का तरीका भी हम खुद खोजते हैं। वैसे तो इतिहास में अनेक लोगों की मित्रता प्रसिद्ध है लेकिन यदि किसी को पक्की दोस्ती की मिसाल देनी हो तो सिर्फ दो दोस्तों के नाम लिए जाते हैं– श्रीकृष्ण और सुदामा इन्हीं दो दोस्तों की प्रसिद्ध कहानी को याद दिलाता है यह पाठ जिसका नाम है सुदामा चरित।

सुदामा चरित कवि नरोत्तमदास द्वारा ब्रज भाषा में रचित काव्य–ग्रंथ है। बहुत से विद्वान मानते हैं कि इस ग्रंथ की रचना सन् 1582 में हुई होगी। इस ग्रंथ में निर्धन ब्राह्मण सुदामा की कथा है जो बालपन में कृष्ण का मित्र और महान कृष्ण भक्त भी था। आप जो अंश पढने जा रहे हैं, उन्हें इसी ग्रंथ में से चुना गया है।

सुदामा अत्यधिक गरीब थे। उनकी पत्नी को जब पता चलता है कि वे श्रीकृष्ण के मित्र हैं तो वह उनको कृष्ण के पास आर्थिक सहायता के लिए भेजती है। जब वे श्रीकृष्ण के महल पर पहुँचते हैं तो द्वारपाल कृष्ण को बताता है कि एक दीन–हीन ब्राह्मण आपको पूछ रहा है। वह अपना नाम सुदामा बता रहा है। कृष्ण तुरंत सुदामा से मिलने दौड़े चले जाते हैं। वे जब सुदामा की दशा देखते हैं तो उन्हें बहुत दुख होता है। फिर वे भाभी द्वारा भेजे गए उपहार को सुदामा से माँगते हैं। सुदामा के संकोच करने पर वे बचपन की बात याद दिलाते हुए उससे भाभी द्वारा भेजी सौगात ले लेते हैं। इतना सब होने के बाद सुदामा अपने घर को लौटने लगते हैं लेकिन वे दुखी हैं क्योंकि कृष्ण ने उनकी कोई सहायता नहीं की है। जब सुदामा अपने गाँव पहुँचते हैं तो वहाँ बने विशाल भवनों को देखकर भ्रमित हो जाते हैं। अब उन्हें श्रीकृष्ण की कृपा समझ में आ जाती है। अंत में सुदामा की राजसी शोभा और कृष्ण की कृपा का वर्णन किया गया है।

इस काव्यांश में मित्रता का बहुत अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। कवि इस रचना के माध्यम से भगवान श्री कृष्ण के गुणों और कृपा का बखान करते हैं।

जन्म सन 1493 (संवत– 1550)

जन्म स्थान बाड़ी

इतनी सुंदर कविता लिखने वाले कवि नरोत्तमदास के जीवन के विषय में कुछ विशेष ज्ञात नहीं है। विद्वानों ने बहुत

खोजबीन करने के बाद पता अनुमान लगाया है कि ये बाडी (सीतापुर, उत्तर प्रदेश) नामक स्थान के रहने वाले थे। इनके ग्रंथों में एक सुदामा चरित ही उपलब्ध है। सुदामा चरित अत्यंत सरस, सरल, स्वाभाविक और भक्ति-भाव से भरा एक रोचक काव्य है। इसी ग्रंथ के बल पर नरोत्तमदास साहित्य जगत में अपना स्थान बना चुके हैं। 'सुदामा चरित' को हिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर माना जाता है।

'सुदामा चरित' के संबंध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है:- 'यद्यपि यह छोटा है पर इसकी रचना बहुत सरस और हृदयग्राहिणी है'

प्रश्न 1: प्रस्तुत रचना को पढ़ते समय आपकी आँखों में मित्र मिलन का जो दृश्य झिलमिला रहा होगा, उसका शब्द चित्र प्रस्तुत करें।

____
____
____
____
____

प्रश्न 2: "चोरी की बान में हौ जू प्रवीने।" यह बात किसने किससे कही और क्यों कही होगी?

____
____
____
____
____

प्रश्न 3: आप अपने सच्चे मित्र में क्या-क्या विशेषताएँ चाहेंगे?

____
____
____
____
____

4. वर्ग पहेली में संज्ञा शब्द चुनकर सही जगह में लिखो –

बा	जा	र	ना	क
घ	मो	ची	बैं	टो
कि	ता	ब	क	री
सा	ला	धो	बी	छ
न	ब	गी	चा	बी

व्यक्ति का नाम
-
-
-

प्राणी का नाम
-
-
-

वस्तु का नाम
-
-
-

स्थान का नाम
-
-
-

5. नीचे लिखे शब्दों से बने तीन-तीन शब्दों का परिवार बनाओ -

(क) मान

....

(ख) शिक्षा

....

(ग) कला

....

6. प्रत्येक पंक्ति में जो शब्द समानार्थी नहीं है, उसके नीचे रेखा खींचो।

- तरु पेड़ वृक्ष डाली
- धरती मिट्टी धरा ज़मीन
- सुवास गंध खुशबू सुगंध
- डाली टहनी पेड़ शाखा
- भौंरा भँवरा भ्रमर भँवर

7. अनगिनत शब्द 'अन' उपसर्ग लगाकर बना है और चतुराई शब्द में 'आई' प्रत्यय लगा है।
'अन' उपसर्ग और 'आई' प्रत्यय लगाकर चार-चार शब्द लिखिए-

पाठ 5

जहाँ पहिया है

'जहाँ पहिया है' शीर्षक पढ़ते ही आपके मस्तिष्क में सभ्यता के विकास की कहानी और उसमें पहिये के योगदान की बातें कौंधने लगेगी। क्या आपका मानस आपको इस दिशा की तरफ़ भी ले जाएगा कि पहिया सभ्यता व संस्कृति के विकास की धुरी ही नहीं अपितु सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलनों की नींव भी बन सकता है? आपके प्रश्न का उत्तर प्रस्तुत रिपोर्ताज 'जहाँ पहिया है' में मिलेगा जो पी.साईनाथ की मूल रचना का हिन्दी अनुवाद है। यह पाठ आपको मुख्यत: तीन नए बिंदुओं से अवगत कराता है, पहला बिन्दु तो यही कि हिन्दी जब अनुवाद की गलियों-वीथिकाओं से गुजरती हुई हमारे सामने आती है तो उसका स्वरूप कैसा होता है। हाँलाकि आपने पहले भी अनेक अनूदित रचनाओं का आनंद लिया होगा। दूसरा बिन्दु यह कि यह पाठ आपको रिपोर्ताज शैली से परिचित करवाता है। अब तक आप कहानी, एकांकी, कविता आलेख, निबंध, जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र यात्रा वृतान्त आदि शैलियों से परिचित हो चुके हैं। 'जहाँ पहिया है' आपको रिपोर्ताज शैली से रूबरू होने का अवसर दे रहा है। आपको अपने अध्यापको की ओर से कई बार ऐसे काम मिलते होंगे जैसे कि 'आपने साक्षरता रैली में भाग लिया था, रैली के उद्देश्य-प्रयोजन सहित समूची कार्यवाही की रिपोर्ट बनाओ'। आपने इस तरह की कई रिपोर्ट बनाई होंगी। बस रिपोर्ताज़ आपके द्वारा बनाई जा रही रिपोर्टो का निखरा हुआ स्वरूप है।

अब आप तीसरे बिन्दु के बारे में पूछेंगे कि वह कौन सा बिन्दु है जिससे हम अभी तक अंजान हैं। यह कहना तो सर्वथा अनुचित होगा कि आप इस तीसरे बिन्दु से अंजान होंगे। हो सकता है आप में से कुछ के परिवार जन इसमें शामिल रहें हो, हो सकता है कि आपने समाचार पत्रों में पढ़ा हो। पाठ के माध्यम से हम जिस तीसरे बिन्दु पर पहुँचते है वह पहिए के माध्यम से एक बहुत बड़े सामाजिक आन्दोलन की शुरूआत।

सुप्रसिद्ध पत्रकार पी.साईनाथ की अंग्रेजी से अनूदित यह रपट स्त्री सशक्तीकरण, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता का सजीव उदाहरण प्रस्तुत करती है।

प्रश्न 1: "साइकिल ने महिलाओं को पुरूषों द्वारा थोपे गए दायरे के अंदर रोज़मर्रा की घिसी-पिटी चर्चा से बाहर निकलने का रास्ता दिखाया।"

उपर्युक्त वाक्य का आशय स्पष्ट करें।

प्रश्न 2: प्रस्तुत रिपोर्ताज के आधार पर बताएँ कि साइकित किस प्रकार से आजादी की प्रतीक साबित हुई ?

प्रश्न 3: 'नवसाक्षर' से आपका क्या अभिप्राय है ? (प्रौढ़ शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में उत्तर की खोज करें)।

प्रश्न 4: साइकिल चलाना ग्रामीण महिलाओं के लिए इतना महत्त्वपूर्ण क्यों है ?

5. नीचे लिखे शब्दों को पढ़ो और सही शीर्षक के नीचे लिखो –

परेड शीशा भवन समय

पेंसिल शहर दीवार

इमारत पट्‌टी राजधानी

ज़िला मैदान साइकिल

स्त्रीलिंग	पुल्लिंग
______	______
______	______
______	______
______	______
______	______

6. वर्ग पहेली में से दिए गए शब्दों के विलोम शब्द चुनकर लिखिए –

न	अ	शां	ति
वी	मी	शो	दा
न	र	क	न
स	र	ल	व

हर्ष – .... गरीब – ....

देवता – .... प्राचीन – ....

कठिन – .... स्वर्ग – ....

आज – .... शांति – ....

7. क्या आपको साइकिल चलाने का अनुभव है ?

साइकिल चलाना सीखने के दौरान हुए अपने अनुभवों को लिखें।

(जो साइकिल नहीं चलाते, वह दूसरों के अनुभव सुनकर रिपोर्ताज शैली में लिखें)

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

पाठ 6

अकबरी लोटा

एक पहेली बूझो तो सही :

राही प्यासा क्यों ? गधा उदास क्यों ?

दोनों प्रश्नों का उत्तर एक ही है। बूझे ? सही जवाब ! उत्तर है लोटा

लोटा एक बर्तन है जो पानी पीने के काम भी आता है, दूध रखने के काम आता है और कुछ चीजें मापने के काम भी आ जाता है जैसे तेल आदि। लेकिन क्या यह किसी को उल्लू बनाने के काम भी आ सकता है ? हैरान हो गए ? अजी हाथ कंगन को आरसी क्या ? अभी पढ़ लीजिये कि लोटे से किसने किसे उल्लू बनाया।

'अकबरी लोटा' कहानी के नाम से पता चल रहा है कि यह किसी खास लोटे की कहानी है। बादशाह अकबर का नाम तो तुमने सूना या पढ़ा होगा। क्या यह उसी राजा का लोटा है ? फिर तो यह बहुत मूल्यवान और दुर्लभ लोटा है, कोई ऐसा-वैसा नहीं। लेकिन यह एक काल्पनिक कहानी है, इतना हम बताए देते हैं।

इस कहानी में एक तो लाला झाऊलाल है जिनकी पत्नी उनसे ढाई सौ रुपये की मांग करती है। यह सुनकर वे एकदम घबरा गए कि पत्नी की फरमाइश पूरी कैसे करें ! उन्होंने इतने रुपये कभी देखे तक नहीं थे। पत्नी ने उनसे यह भी कह डाला की यदि वे नहीं दे सकते तो वह अपने भाई से मांग लेगी। अब तो यह लाला झाउलाल की इज्जत की बात हो गयी। उन्होंने अपनी पत्नी से कहा कि वे सात दिनों के अन्दर रुपयों का इंतजाम कर देंगे। चार दिन ऐसे ही बीत गए, रुपयों का कोई प्रबंध नहीं हो पाया। पांचवे दिन उन्होंने अपने मित्र पंडित बिलवासी मिश्र को सारी कहानी सुनाई। उन्होंने कहा, "मेरे पास रुपए अभी तो नहीं हैं लेकिन कल तक कुछ प्रबंध करने का वादा करता हूँ"। सातवाँ दिन आ गया लेकिन पंडित जी रुपये लेकर नहीं आये। लाला जी पंडित जी का छत पर इंतजार कर रहे थे। प्यास लगने लगी तो उन्होंने पीने के लिए पानी मंगवाया। उनकी पत्नी एक टेढ़े - मेढ़े से लोटे में पानी भर लायी। छत की मुंडेर पर खड़े होकर पानी पी रहे थे कि लोटा हाथ से छूट गया और नीचे गली में किसी अंग्रेज पर जा गिरा। वह जोर - जोर से चिल्लाने लगा। तभी पंडित जी आ गए। उन्होंने किसी तरह अँगरेज को शांत कराया और बोले- "यह लोटा हैं खरीद लेता हूँ, यह कोई साधारण लोटा नहीं है बल्कि अकबरी लोटा है"।

अँग्रेज ने यह सुना तो वह भी लोटा खरीदने के लिए तैयार हो गया। पंडित जी और अंग्रेज में लोटा खरीदने की होड़ लग गयी। पंडित जी ने कहा, "जो लोटे का अधिक दाम लगाएगा वही लोटा खरीद ले जायेगा"।

दोनों बोली लगाने लगे। पचास रुपये से बोली शुरू हुई और पांच सौ रुपये पर जाकर समाप्त हुई। अंग्रेज ने उस लोटे को खरीद लिया। पैसे मिल जाने के बाद लाला झाऊलाल ने पंडित जी से पूछा – "बिलवासी जी! आपने रुपयों का प्रबंध कैसे किया?" पर पंडित जी ने उन्हें कुछ नहीं बताया।

तो देखा आपने? 'अकबरी लोटा' मनोरंजन और हास्य से भरपूर कहानी है। यह बुद्धिमान भारतीयों और मूर्ख अंग्रेज अफसर की कहानी है। यह दो मित्रों की सच्ची मित्रता और एक अंग्रेज अफसर को मूर्ख बनाने की कहानी है। जैसा कि आप जान चुके हैं, इस कहानी में दो मित्र हैं- झाऊलाल और पंडित बिलवासी मिश्र। पं. बिलवासी अपने मुसीबत में फंसे मित्र की सहायता उसके बेढंगे लोटे को बेचकर करता है। अब आप जान ही चुके हैं कि वह इस लोटे को एक अंग्रेज व्यक्ति को अकबरी लोटा कहकर पाँच सौ रुपयों में बेच देता है। यह कहानी इतनी रोचक है कि इसे पढ़ना शुरू करने के बाद पूरा पढ़े बिना छोड़ ही नहीं पाते।

इस कहानी के लेखक अन्नपूर्णानंद वर्मा हैं। अन्नपूर्णानन्द (जन्म- 21 सितम्बर, 1895; मृत्यु- 4 दिसम्बर, 1962) हिन्दी में शिष्ट हास्य लिखने वाले कलाकारों में अग्रणी थे। उन्होंने अधिकतर कहानियाँ लिखी हैं। इनकी कहानियों की भाषा और परिस्थितियों के कारण हँसी आ जाती है।

अन्नपूर्णानन्द काशी, उत्तर प्रदेश के निवासी थे। उन्होंने अपनी अधिकांश कहानियों में काशी नगर के वातावरण को उभारा है। अन्नपूर्णानन्द की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं:

मनमयूर

मेरी हजामत

मंगलमोद

मगन रहु चोला

महाकवि चच्चा

पं. विलासी मिश्र

प्रश्न 1: 'अकबरी लोटा' कहानी में आपको हास्य के पुट कहाँ-कहाँ नज़र आए, उन्हें चिह्नित करें।

प्रश्न 2: "कुछ ऐसी गढ़न उस लोटे की थी कि उसका बाप डमरू, माँ चिलम रही हो।" लोटे के आकार-प्रकार के विषय में कहे गए इस कथन के आधार पर लोटे का चित्र बनाकर उसमें मनपसंद रंग भरें।

3. संज्ञा शब्द छाँटिए—

आ	म	क	ला	प	ह
नी	चा	स	ख	ट	ब
घ	न	च	टि	ना	द
ड	रू	प	या	आ	लू
क	च	गो	द	द	झ
ज्ञ	ट	लि	ग्रा	मी	ण
चू	ड़ि	याँ	ड़	ह	फ

4. **वचन बदलिए—**

रुपया, जोड़ा, गोली, कलाई, चूड़ी

....

5. **सही मिलान कीजिए—**

	पुल्लिंग	**—**	**स्त्रीलिंग**
1.	काका		लड़की
2.	मर्द		गाय
3.	लड़का		काकी
4.	पिता		औरत
5.	बैल		माता

6. **विलोम शब्द लिखिए—**

शहरी, शांति, हार, जीवन, अंदर

....

7. **प्रत्यय अलग कीजिए—**

वैवाहिक, खटिया, दैनिक, रोजाना, सुंदरता

....

8. 'अ' उपसर्ग लगाकर विपरीतार्थी शब्द बनाइए।

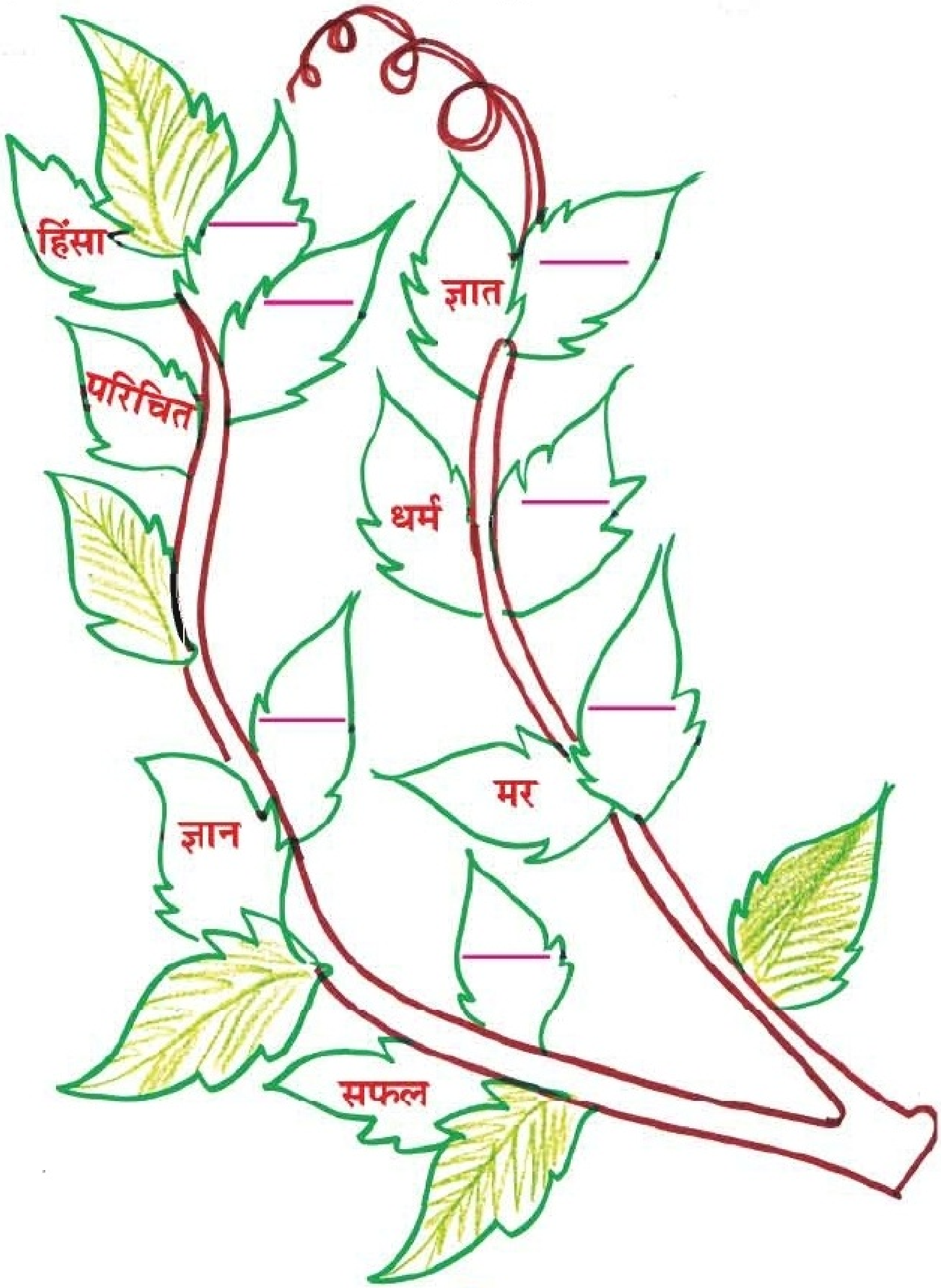

निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए -

क) उसका प्राण निकल गया।

....

ख) हम खाना खा लिए हैं।

....

ग) सीता ने आज आने को बोला था।

....

घ) खरगोश को काटकर गाजर खिलाओ।

....

ड.) मेरे को रंगीन चित्रों वाला किताब चाहिए।

....

च) आप गाड़ी पर चले आओ।

....

पाठ 7

सूर के पद

"मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो" आपने यह पंक्ति कभी पढ़ी या सुनी न हो, ऐसा हो ही नहीं सकता! यह पंक्ति सैकड़ों साल पहले लिखे गए एक भजन या कविता की है जिसे लिखा था भगवान श्री कृष्ण के एक बहुत बड़े भक्त कवि सूरदास ने। उन्होंने केवल यही कविता नहीं बल्कि ऐसी सैकड़ों कविताएँ लिखी थीं।

सूरदास जी ने श्री कृष्ण के बचपन की शरारतों और घटनाओं का बहुत सुंदर वर्णन अपनी कविताओं में किया है। इसलिए वे वात्सल्य रस के सम्राट माने जाते हैं। उनकी रचनाओं को पढ़ते हुए आपको ऐसा लगेगा कि श्री कृष्ण भी बचपन में आपकी और आपके दोस्तों जैसे ही शरारतें किया करते थे. ।उनके भी अपने माता-पिता से वैसे ही सवाल और शिकायतें हुआ करती थीं जैसी आपको होती हैं। वे भी आपके जैसे ही खेल खेलते थे। उनके माता-पिता भी उनकों बहलाने के लिए वैसी ही बातें किया करते थे जैसी बातें आपके-माता पिता करते हैं। यानी इन कविताओं को पढ़ते हुए आपको लगेगा कि ये बातें तो जानी-पहचानी सी हैं!

सूरदास सूरदास की जन्मतिथि एवं जन्मस्थान के विषय में विद्वानों में मतभेद है। सूरदास का जन्म 1478 ईस्वी में रुनकता नामक गाँव में हुआ। यह गाँव मथुरा-आगरा मार्ग के किनारे स्थित है। कुछ लोग मानते हैं कि सूर का जन्म सीही नामक गाँव में हुआ था। सूरदास के पिता रामदास गायक थे। कई लोग मानते हैं कि सूरदास जन्मान्ध थे।

प्रारंभ में सूरदास आगरा के समीप गऊघाट पर रहते थे। वहीं उनकी भेंट श्री वल्लभाचार्य से हुई और वे उनके शिष्य बन गए। सूरदास की मृत्यु गोवर्धन के निकट पारसौली ग्राम में १५८० ईस्वी में हुई।

सूरदास की अधिकतर रचनाएं सूरसागर और सूरसारावली नाम के ग्रन्थों में सम्मिलित हैं।

सूरदास जी ने अपनी रचनाएं आज से लगभग छह सौ साल पहले ब्रज भाषा में लिखी थीं। जैसा कि नाम से ही पता चल जाता है, ब्रज भाषा, ब्रज, मथुरा के आसपास के इलाकों में अधिक प्रचलित थी, बल्कि आज भी बोली जाती है। आप सूरदास जी के दो पद इस कक्षा में पढ़ेंगे।

पहला पद : जब श्री कृष्ण बच्चे थे तो उन्हें दूध, दही, मक्खन आदि बहुत अच्छे लगते थे। लेकिन हो सकता है कि वे कभी-कभी दूध पीने में आनाकानी करते हों। एक बार माता यशोदा ने उन्हें समझाते हुए कहा, "कान्हा! तू नित्य कच्चा दूध पिया कर, इससे तेरी चोटी दाऊ (बलराम) जैसी मोटी व लंबी हो जाएगी।"

मैया के कहने पर कान्हा दूध पीने लगे। दूध पीते-पीते काफी समय बीत गया लेकिन चोटी वैसी की वैसी रही। यह देखकर एक दिन कन्हैया यशोदा जी से बोले, "अरी मैया! मेरी यह चोटी कब बढ़ेगी? दूध पीते हुए मुझे कितना समय हो गया। लेकिन अब तक भी यह वैसी ही छोटी है। तू तो कहती थी कि दूध पीने से मेरी यह चोटी दाऊ की चोटी जैसी लंबी व मोटी हो जाएगी। शायद तू मुझे इसीलिए रोज नहलाकर बालों को कंघी से संवारती है, चोटी गूंथती है, जिससे चोटी बढ़कर नागिन जैसी लंबी हो जाए। कच्चा दूध भी इसीलिए पिलाती है। इस चोटी के ही कारण तू मुझे माखन व रोटी भी नहीं देती।"

इतना कहकर श्रीकृष्ण रूठ जाते हैं। सूरदास कविता के अंत में कहते हैं कि तीनों लोकों में श्रीकृष्ण-बलराम की जोड़ी मन को सुख पहुंचाने वाली है।

पहला पद : जैसा कि आप जानते हैं, बाल श्री कृष्ण को दही-मक्खन बहुत पसंद थे। यह बात गोकुल के सारे ग्वाले और गोपियाँ जानते थे। वैसे तो गोपियाँ खुद ही श्री कृष्ण को मक्खन-दही बुला-बुलाकर खिलाया करती थीं लेकिन जब श्री कृष्ण उनके पास नहीं जाते तो खुद ही यशोदा माता के घर जाकर उन्हें उलाहने दिया करती थीं। वे श्री कृष्ण की सच्ची-झूठी शिकायतें भी करती थीं। ऐसे ही एक दिन गोपियाँ यशोदा के पास आई और कृष्ण की शिकायत करती हुई बोलीं, "हे यशोदा! तेरे पुत्र कृष्ण ने हमारा मक्खन खा लिया है। दोपहर के समय घर को सूना जानकर ढूँढते-ढूँढते वह घर में आ गया। उसने दरवाजा खोलकर, मंदिर में रखा सारा दूध-दही स्वयं भी खाया और अपने मित्रों को भी खिलाया। पहले तो वह ओखली में चढ़ा, फिर उसने छींके पर रखा हुआ सारा दूध-दही ले लिया। इतना ही नहीं, उसने उसे जमीन पर भी गिरा दिया। इस तरह रोज गोरस (दूध) की हानि हो रही है। हमें समझ नहीं आता कि यह कितना शैतान लड़का है।"

सूरदास जी कहते हैं कि गोपियाँ यशोदा को ताने मारते हुए कहती है कि तूने कैसे पुत्र को जन्म दिया है! अर्थात यह तेरा पुत्र कैसा है जिसपर तेरा जरा-सा जोर नहीं है।

प्रश्न 1: आपने इस पुस्तक में सूर के पद से पहले कबीर की साखियाँ पढ़ी।
पद और साखी में अंतर स्पष्ट करें।

प्रश्न 2: 'सुदामा चरित' और 'सूर के पद' दोनों में श्री कृष्ण का उल्लेख हुआ है। दोनों में वर्णित अन्तर को स्पष्ट करें।

प्रश्न 3: सूरदास के पद पढ़कर श्री कृष्ण का जो बिंब आपके मानस में उभरता हो, उसका चित्रण करें।

4. निम्नलिखित अनुच्छेद को कारक चिह्नों द्वारा पूरा कीजिए—

राम सुबह स्कूल .... जाने .... लिए घर .... निकला। वह बस-स्टॉप .... पहुँचा। वहाँ .... बहुत भीड़ थी। वहाँ उसने नीता .... देखा। वह घायल थी। वह नीता .... पास गया और पूछा कि वह कैसे घायल हो गई है। नीता .... बताया कि वह बस .... सीढ़ी .... फिसलकर गिर गई और उसे चोट लग गई।

5. विशेषणों को उनके भेदों से उचित मिलान कीजिए—

(क) पाँच मित्र	सार्वनामिक विशेषण
(ख) चाँदनी रात	परिमाणवाचक विशेषण
(ग) दो किलो आटा	गुणवाचक विशेषण
(घ) मेरी पुस्तक	संख्यावाचक विशेषण

6. **कुछ मजेदार करें—**

आओ बच्चों खेलें खेल, शुद्ध शब्द पर चढ़ोगे सीढ़ी, अशुद्ध शब्द पर काटे साँप।

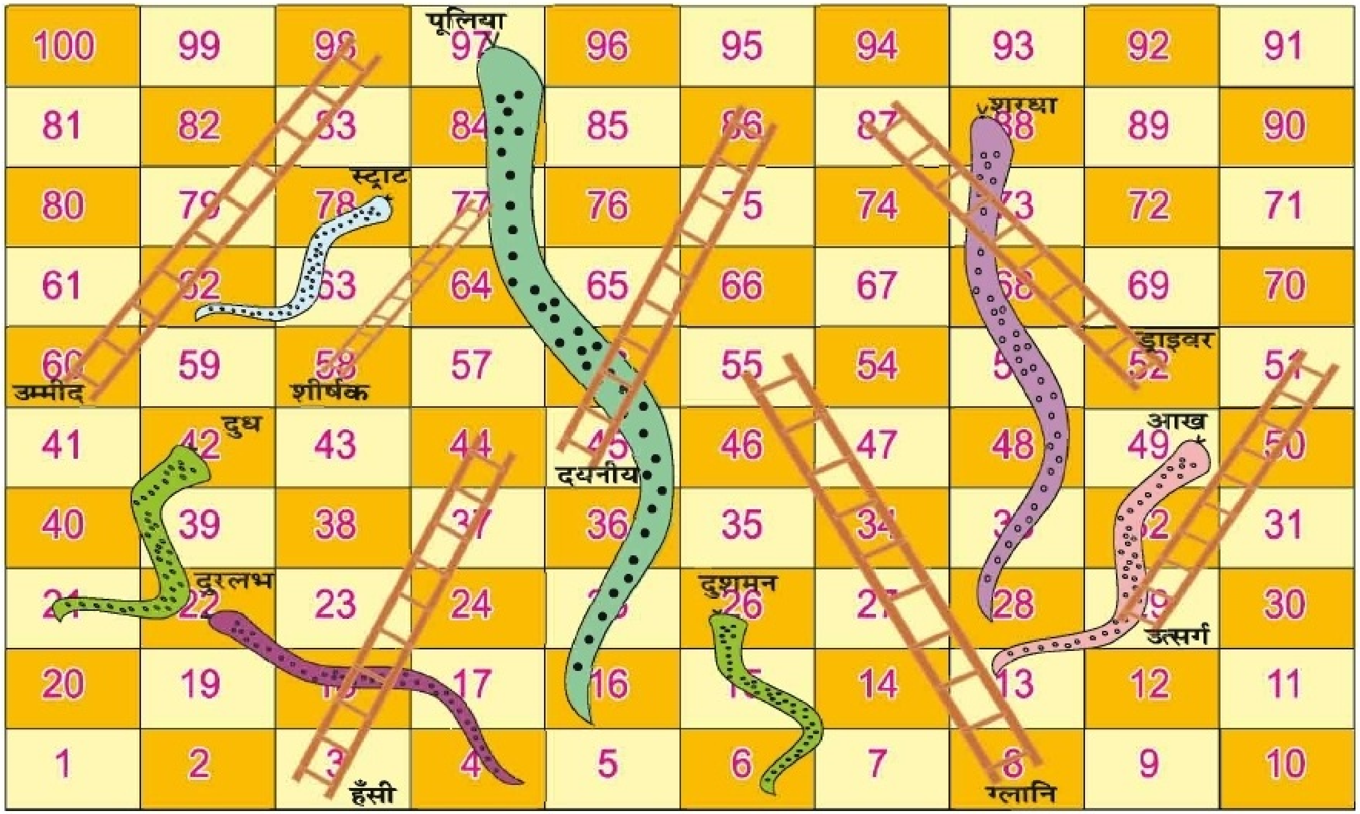

7. चित्र के नाम को देखते हुए खाली जगह में उनके दो-दो पर्यायवाची लिखो-

चाँद ______ ______

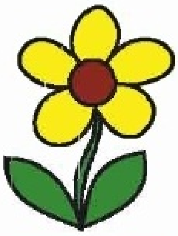

फूल ______ ______

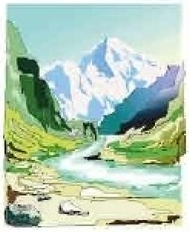

नदी ______ ______

पेड़ ______ ______

पाठ 8

पानी की कहानी

दोस्तो, आप कभी न कभी यह अवश्य सोचते होंगे कि यह दुनिया कैसे बनी, दुनिया में सबसे पहले क्या था, यह दुनिया किन चीजों से बनी और उन चीजों में कैसे-कैसे बदलाव आये ? आज हम आपके साथ उस पदार्थ की कहानी साझा करने वाले हैं जो उस समय भी था जब यह धरती बनी थी और उस समय भी होगा जब यह धरती नहीं रहेगी। वह पदार्थ है पानी।

यह कहानी अनोखी है। कल्पना का सहारा लेकर इसमें पूरी तरह वैज्ञानिक जानकारी को रोचक तरीके से तुम तक पहुँचाया गया है। कल्पना सिर्फ इतनी सी है की कहीं घूमने गए एक आदमी को ऐसा लगता है कि पानी की एक बूँद उसे अपनी कहानी सूना रही है। लेकिन जो कहानी सुनाई जा रही है, वह बिलकुल सच्ची है।

पानी के कई रूप होते हैं। ओस, भाप, बर्फ, फुहार या नल से निकलने वाला वही जाना-पहचाना रूप। पानी के ये सभी रूप दो गैसों से मिलकर बनते हैं - ऑक्सीजन और हाइड्रोजन से।

पानी की कहानी शुरू होती है इन दोनों गैसों के मिल जाने से। ये दोनों गैसें मिलकर पानी की छोटी-छोटी बूँदें बन जाती हैं। ये बूँदें मिलकर बादल बना लेती हैं। बादल जब पानी को सँभाल नहीं पाता तो बारिश हो जाती है। बारिश का कुछ पानी सूर्य की गर्मी से फिर भाप बन जाता है, कुछ नदियों-नालों में बह जाता है और कुछ धरती के भीतर समा जाता है। धरती के भीतर के पानी को हम कुओं आदि से निकालकर इस्तेमाल कर लेते हैं।

जो पानी धरती के भीतर समा जाता है, उसे सिर्फ हम ही इस्तेमाल नहीं करते बल्कि पेड़-पौधे भी इस्तेमाल करते हैं। पेड़ अपनी लंबी-लंबी जड़ों से मिट्टी के बीच मौजूद जल-कणों को खींच लेते हैं और धीरे-धीरे यह पानी जड़ों से पत्तों तक पहुँच जाता है। पत्तों से वह फिरसे भाप बनकर उड़ जाता है। इसी रोचक और रोमांचक सफर की कहानी तुम इस पाठ में पढ़ोगे।

यह पाठ कई कारणों से बहुत खास है। यह पाठ लगभग सौ-डेढ़ सौ साल पहले लिखा गया था, यानी तुम्हारे दादाजी के जन्म से भी बहुत पहले। उस समय भारत अंग्रेजों का गुलाम था। अधिकतर ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें उस समय भी अंग्रेजी में ही मिलती थीं। उस समय कुछ लोगों ने सोचा कि आम ज्ञान-विज्ञान की बातें आम जनता तक पहुँचाने के लिए जरूरी है कि ऐसे लेख और पुस्तकें आम बोलचाल की हिंदी में लिखी जानी चाहिए ताकि सब उन्हें समझ सकें। ये जानकारियाँ रोचक तरीकों से प्रस्तुत करनी चाहिए ताकि लोग चाव से इन्हें पढ़ें, मजबूरी में नहीं, इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर इस लेख को और ऐसे अनेक लेखों को लिखा गया था। यह लेख हिंदी में लिखे गए शुरूआती विज्ञान लेखों में शामिल है।

आज आपको शायद लगे कि इस लेख को लिखने में कौन-सी कोई बड़ी बात है! लेकिन आप कल्पना कीजिए कि यह लेख उस समय लिखा गया था जब लेखकों को यह भी खुद ही सोचना पड़ता था कि विभिन्न वैज्ञानिक शब्दों को हिंदी में कैसे लिखें। उदाहरण के लिए, ऑक्सीजन को ऑक्सीजन लिखें या ओशोजन लिखें या दोनों ही लिख दें। किसी भी काम को सबसे पहले करना या शुरू करना आसान नहीं होता। है न?

इस लेख को "हिंदी में विज्ञान लेखन के सौ वर्ष" नामक पुस्तक से लिया गया है। इस पुस्तक में ऐसे ही दुर्लभ और रोचक लेखों को खोज-खोजकर संकलित किया गया है। इस लेख के लेखक 'रामचंद्र तिवारी' के बारे में आज हम अधिक नहीं जानते। लेकिन उन्होंने यह लेख लिखकर जो महान कार्य किया है, वह तब तक जीवित रहेगा जब तक हिंदी की दुनिया कायम रहेगी।

प्रश्न 1: आपने प्राथमिक कक्षाओं में जलचक्र के बारे में पढ़ा होगा। उसका चित्र बनाएँ। प्रस्तुत पाठ जलचक्र के बारे में आपकी समझ को कैसे बढ़ाने में योगदान देता है, लिखे।

प्रश्न 2: जल और वर्षा को लेकर बहुत से लोक गीत और फिल्मी गीत प्रचलित हैं। अपने सहपाठियों से साथ मिलकर इन गीतो का संग्रह करें। कोई एक गीत यहाँ लिखें।

3. आपने समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं और टेलीविजन पर ऐसी अनेक घटनाएँ देखी-सुनी होंगी जिनमें लोगों ने जल संरक्षण के लिए नवाचारी प्रयास किए हो। ऐसे समाचार या लेख ढूढें और दी गई जगह में चिपकाएँ।

4. इन डिब्बों में प्रत्यय शब्द छिपे हैं उन्हें ढूंढों और सामने वाली खाली जगह में लिखो-

ल	गि	च	ड
क	ल	न	म
ह	ज	श	ती

गिन + ती = गिनती

ल	हैं	ब	ख
म	सी	ई	न
र	त	छ	अ

______ + ______ = ______

ह	छ	न	उ
ब	च	त	द
क	थ	स	अ

______ + ______ = ______

म	ह	ले	न
थ	ज	ख	घ
र	भ	क	ढ

______ + ______ = ______

त	द	ई	भी
ख	दा	क	जा
प	र	ब	थ

______ + ______ = ______

ओ	बै	य	म
ऐ	ज	ठ	व
ह	फ	अं	ना

______ + ______ = ______

5. पेड़ की पत्तियों पर कई तरह के शब्द लिखे हैं। उनमें से संज्ञा शब्द चुनकर लिखो–

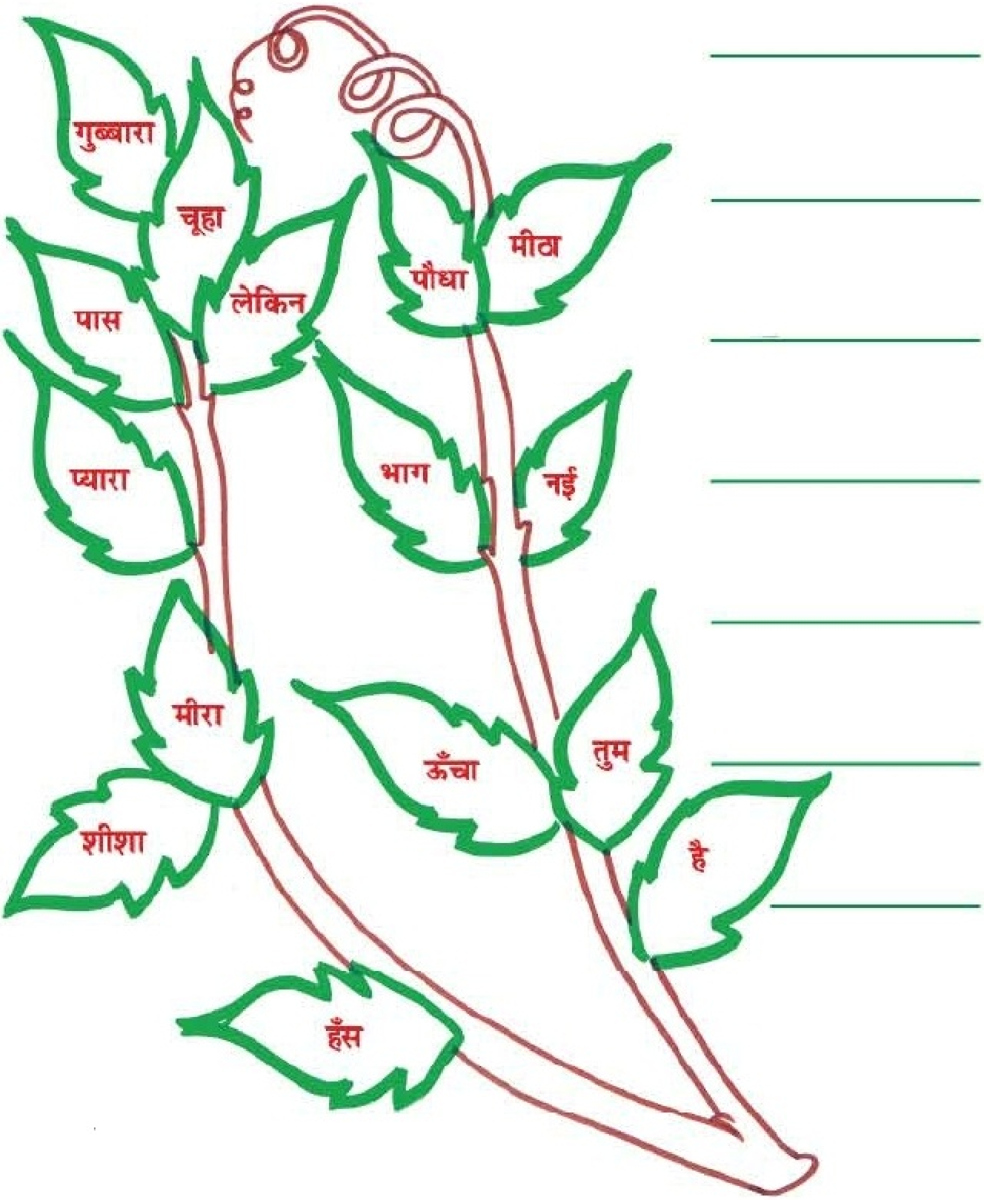

6.

सबसे बड़ी सेवा

इटली फ्रांस के साथ युद्ध में जूझ रहा था। उस समय एक युवक पहाड़ी की चोटी पर बैठा दूरबीन से सारे युद्ध का दृश्य देख रहा था। उसने देखा कि घायल कराहते हुए सैनिकों को कूड़े-करकट की तरह ढो कर मोर्चे के पीछे के सहायता-शिविरों में छोड़ा जा रहा था। सैनिकों की ऐसी दयनीय दशा पर वह युवक अत्यंत द्रवित हो गया। दरअसल वह युवक फ्रांसीसी सम्राट से मिलने पेरिस गया था। किंतु जब उसे पता चला कि सम्राट मोर्चे पर गए हैं तो वह उनसे मिलने उसी ओर चल पड़ा। वहां का दृश्य देख वह सम्राट से मिलने की बात भूल बैठा। अब बस उसके मन में यही बात थी कि कैसे घायल व मरणासन्न सैनिकों की सहायता की जाए। तभी उसे सूचना मिली कि घायल सैनिक गिरजाघर में हैं। वह तुरंत उनकी सहायता के लिए वहां जा पहुंचा। वहां भरसक उनकी मदद की। इसी बीच युद्ध समाप्त हो गया। पर युवक के मन में यह बात घर कर चुकी थी कि किसी भी तरह युद्ध में घायल होने वाले सैनिकों की सेवा के लिए एक ऐसा दल होना चाहिए जो तुरंत मौके पर पहुंच कर उन्हें प्राथमिक चिकित्सा उपलब्ध कराए और जीवनदान दे। उसने सेवा करने वालों का एक दल तैयार किया। अपने अथक प्रयासों से उसने इस दल को एक अंतरराष्ट्रीय संस्था के रूप में मान्यता भी दिलवा दी। अब कहीं युद्ध छिड़ता है तो उस संस्था के सदस्य तुरंत घायल सैनिकों की सेवा में जुट जाते हैं। ये सदस्य तटस्थ माने जाते हैं और एक विशेष प्रकार की पोशाक पहनते हैं जिस पर एक चिह्न बना रहता है। इसका नाम रेडक्रॉस है। रेडक्रॉस के संस्थापक यही युवक थे। इस युवक का नाम था जीन हेनरी ड्यूनेंट। जीन जेनेवा के एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मे थे। प्रत्येक वर्ष जीन हेनरी के जन्मदिवस पर आठ-मई को रेडक्रॉस दिवस मनाया जाता है।

संकलनः रेनू सैनी

एकदा
और पढ़ने के लिए देखें
www.ekda.nbt.in

ऊपर दी गई समाचार पत्र की कतरन को ध्यान से पढ़िए और अपने साथियों के साथ इस पर चर्चा कीजिए तथा दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1) जीन हेनरी ड्यूनेट कौन था ?

....

....

2) रेडक्रास की स्थापना किसने और क्यों की ?

....

....

3) रेडक्रास की स्थापना किस उददेश्य से की गई ? उसे तटस्थ क्यों माना है ?

....

....

4) रेडक्रास दल के लोग विशेष पोशाक क्यों पहनते हैं ?

....

....

5) रेडक्रास दिवस कब और क्यों मनाया जाता है ?

....

....

6) किस घटना को देखकर जीन हेनरी का मन पिघल गया ?

....

....

7) दी गई घटना में किस मानवीय मूल्य की बात की गई है ?

....

....

पाठ 9

टोपी

पाठ प्रवेश –

"नानी के घर जाऊँगी
दूध मलाई खाऊँगी
मोटी होकर आऊँगी
तब तुम मुझको खा जाइयो।"

या फिर

"आँधी आई
बगूला आया
तेरो दूल्हो आया"

ये पंक्तियाँ अवश्य ही आपके स्मृतियों के खजाने में कहीं न कहीं टँकी होंगी और अक्सर मन से कोमल तन्तुओ को सहलाती गुदगुदाती होगी। आपको याद होंगी अपने छुटपन में सुनी वे लोककथाएँ जिनमें कुछ पंक्तियों विशेष की बार-बार आवृत्ति होती थी। एक तरफ तो ये पंक्तियाँ कुछ घटनाओं विशेष के साथ बार-बार आकर कहानी में रोचकता पैदा करती थी तो साथ ही भाषा के विकास में भी पूरा-पूरा योगदान देती थी। कुछ ऐसी ही प्रकृति को आत्मसात किए एक लोक कथा 'टोपी' आपके सामने प्रस्तुत है जो एक गौरेया और उसके साथी नर गौरेया की चुहलबाजी से शुरू होती है। इस रसभरी लोक कथा को पढ़कर आप आनन्द के सागर में गोते तो लगाएगें ही साथ ही अपनी शब्द संपदा को बहुत से देशज शब्दों से समृद्ध भी करेंगे।

आप संभवतया अपने आप से सवाल करें कि मंगल ग्रह की उड़ान करने वाली सदी में 'टोपी' जैसी लोककथा को पढ़ने की भला क्या ज़रूरत? लोकगीत, लोक कथाओं, लोक नृत्यों का अपना ही एक सम्मोहन है। लोक कथाओं ने न तो विज्ञान को कभी घता बताई और न ही फंतासी या तिलिस्म से कभी परहेज किया। बल्कि ये कह सकते हैं कि कल्पनाओं के सागर में गोते लगाती इन लोक कथाओं ने ही वैज्ञानिक आविष्कारों के लिए धरातल तैयार किया है। अब आपको 'टोपी' पढ़ने की प्रासंगिकता के संदर्भ में कोई शंका न होगी। एक बात और यह कहानी आपके भीतर अंकुरित मानवीय मूल्यों को पोषित करने का काम भी करेगी और भारतीय समाज के भुला दिए जाने वाले महत्वपूर्ण हुनरों से भी परिचित करवाएगी।

प्रश्न 1: गौरेया अपनी इच्छापूर्ति के लिए कई कारीगरों के पास जाती है।

क्रम से बताएँ कि वह किन-किन कारीगरों के पास गई? आप अपनी आवश्यकताओं एवं इच्छाओं की पूर्ति के लिए किन-किन कारीगरों के पास जाते हैं?

प्रश्न 2: इस कहानी में टोपी को लेकर कुछ मुहावरे आए हैं। उन्हें खोजिए और अपने वाक्यों में उनका प्रयोग करें।

3. **चित्र की सहायता से मुहावरे पूरे कीजिए और लिखिए –**

पर न रेंगना

....

की

....

ईद का 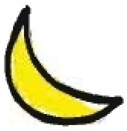

....

का

....

पेट में कूदना

....

4. दृष्टिहीन शब्द दृष्टि शब्द में हीन लगाने से बना है।

हीन लगाकर चार शब्द लिखो।

क) ....

ख) ....

ग) ....

घ) ....

5. सही योजक शब्द चुनकर वाक्य पूरे करो-

क) मेरी तबीयत ठीक नहीं .... मैं आज खाना नहीं खाँऊगी। (क्योंकि/और/इसलिए)

ख) मैंने उसे बहुत समझाया .... उसने मेरी एक न सुनी। (वरना/या/पर)

ग) अविनाश कह रहा था .... वह तुम्हें जानता है। (कि/और/क्योंकि)

घ) मोहन ने बस्ता उठाया .... स्कूल चल दिया। (कि/क्योंकि/और)

6. प्रत्येक पंक्ति में से भिन्न अर्थ वाला शब्द चुनकर लिखो-

डाली	तना	टहनी	शाखा	....
तरु	पात	पत्ते	पत्र	....
फूल	कमल	सुमन	कुसुम	....
टहनी	तरु	वृक्ष	तरुवर	....
गगन	नभ	बादल	आसमान	....

Document Outline

- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_01
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_02
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_03
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_04
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_05
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_06
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_07
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_08
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_09
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_10
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_11
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_12
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_13
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_14
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_15
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_16
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_17
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_18
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_19
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_20
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_21
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_22
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_23
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_24
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_25
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_26
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_27
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_28
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_29
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_30
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_31
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_32
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_33
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_34
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_35
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_36
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_37
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_38
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_39
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_40
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_41
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_42
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_43
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_44
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_45
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_46
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_47
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_48
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_49
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_50
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_51
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_52
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_53
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_54
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_55
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_56
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_57
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_58
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_59
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_60
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_61
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_62
- 10_pragati_II_Hindi_Class_8.pdf_page_63